IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

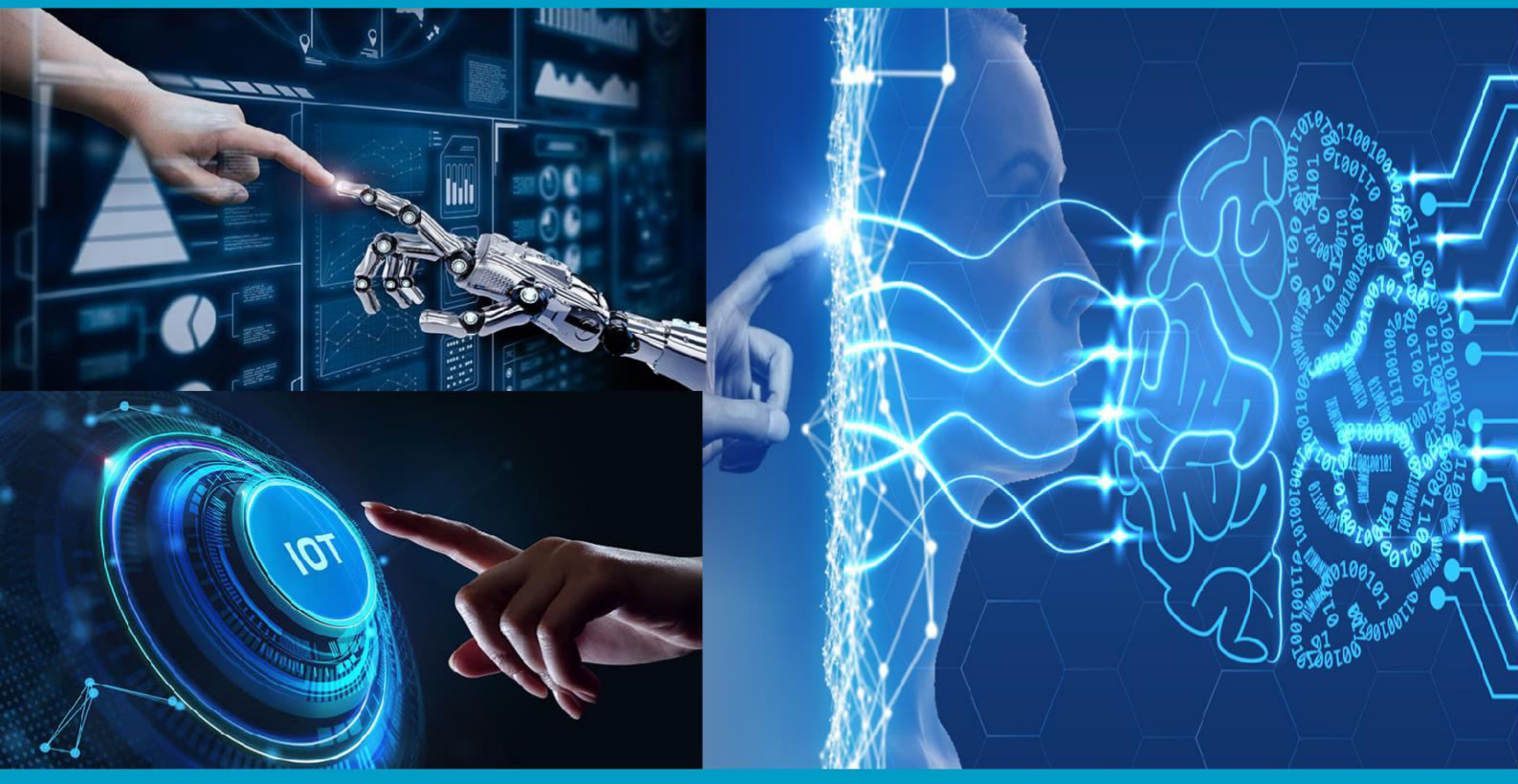

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 10, Issue 7, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 7, July 2023 |

येशु मसीह के ऐतिहासिक अस्तित्व की सत्यता

Sumitra Kumari

Lecturer, Dept. of Geography, Shree Tagore College, Jhalara Road, Kuchaman City, Nagaur, Rajasthan, India

सार

येशु या येशु मसीह[10] प्रथम शताब्दी के यहूदी उपदेशक और धार्मिक नेता थे। वह विश्व के वृहत्तम धर्म ईसाई धर्म के केन्द्रीय व्यक्ति हैं। अधिकांश ईसाई मानते हैं कि वह पुत्र ईश्वर के अवतार है और इब्रानी बाइबल में प्रतीक्षित मसीहा की भविष्यवाणी की गई है।

प्राचीन काल के लगभग सभी आधुनिक विद्वान येशु के ऐतिहासिक अस्तित्व की सत्यता पर सहमत हैं। ऐतिहासिक येशु में अनुसन्धान ने गॉस्पलों की ऐतिहासिक विश्वसनीयता पर कुछ अनिश्चितता उत्पन्न की है और नए नियम में येशु को कितनी ध्यान से चित्रित किया गया है, ऐतिहासिक येशु को दर्शाता है, क्योंकि येशु के जीवन का एकमात्र विस्तृत अभिलेख गॉस्पेलों में निहित है।[11] येशु एक गालीलियन यहूदी था जिनका शिश्नाग्र चर्मछेदन हुआ था, योह्या द्वारा बपतिस्मा लिया गया था, और अपनी स्वयं की परिचर्या शुरू की थी। उनकी शिक्षाओं को शुरू में मौखिक प्रसारण द्वारा संरक्षित किया गया था और उन्हें अक्सर "रब्बी" कहा जाता था। येशु ने साथी यहूदियों के साथ इस बात पर बहस की कि कैसे परमेश्वर का सर्वोत्तम अनुसरण किया जाए, चंगाई में लगे हुए, दृष्टान्तों में सिखाया गया और अनुयायियों को इकट्ठा किया। उन्हें यहूदी अधिकारियों द्वारा गिरफ्तार किया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया, रोमन सरकार को सौंप दिया गया, और यरूशलेम के रोमन प्रीफेक्ट पोन्तियोस पिलातुस के आदेश पर क्रूस पर चढ़ाया गया। उनकी मृत्यु के बाद, उनके अनुयायियों का मानना था कि वह मृतकों में से जी उठे, और उन्होंने जो समुदाय बनाया वह अंततः प्रारंभिक ईसाई चर्च बन गया।

परिचय

येशु अन्य धर्मों में भी पूजनीय हैं। इस्लाम में, येशु (अक्सर उनके क़ुरानीय नाम ईसा द्वारा जाने जाते हैं)[12][13][14][15] को ईश्वर और मसीहा का अन्तिम पैगंबर माना जाता है। मुसलमानों का मानना है कि येशु का जन्म कुंवारी मरियम (इस्लाम में सम्मानित एक अन्य व्यक्ति) से हुआ था, लेकिन वह न तो ईश्वर थे और न ही ईश्वर का पुत्र थे;[16] क़ुरान कहता है कि येशु ने कभी भी दिव्य होने का दावा नहीं किया। अधिकांश मुस्लिम यह नहीं मानते कि उन्हें मार दिया गया या उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया, लेकिन यह कि ईश्वर ने उन्हें जीवित रहते हुए स्वर्ग लोक में आरोहित किया। इसके विपरीत, यहूदी धर्म इस विश्वास को खारिज करता है कि येशु प्रतीक्षित मसीहा थे, यह तर्क देते हुए कि उन्होंने मसीहा की भविष्यवाणियों को पूरा नहीं किया, और न ही दिव्य थे और न ही पुनर्जीवित हुए।

जन्म और बचपन

बाइबिल के अनुसार ईसा की माता मरियम गलीलिया प्रांत के नाज़रेथ गाँव की रहने वाली थीं। उनकी सगाई दाऊद के राजवंशी यूसुफ नामक बढ़ई से हुई थी। विवाह के पहले ही वह कुँवारी रहते हुए ही ईश्वरीय प्रभाव से गर्भवती हो गईं। ईश्वर की ओर से संकेत पाकर यूसुफ ने उन्हें पत्नीस्वरूप ग्रहण किया। इस प्रकार जनता ईसा की अलौकिक उत्पत्ति से अनभिज्ञ रही। विवाह संपन्न होने के बाद यूसुफ गलीलिया छोड़कर यहूदिया प्रांत के बेथलेहेम नामक नगरी में जाकर रहने लगे, वहाँ ईसा का जन्म हुआ। शिशु को राजा हेरोद के अत्याचार से बचाने के लिए यूसुफ मिस्र भाग गए। हेरोद 4 ई.पू. में चल बसे अत: ईसा का जन्म संभवत: 4 ई.पू. में हुआ था। हेरोद के मरण के बाद यूसुफ लौटकर नाज़रेथ गाँव में बस गए। ईसा जब बारह वर्ष के हुए, तो यरुशलम में तीन दिन रुककर मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठे, उन की सुनते और उन से प्रश्न करते हुए पाया। लूका 2:47 और जिन्होंने उन को सुना वे सब उनकी समझ और उनके उत्तरों से चकित थे। तब ईसा अपने माता पिता के साथ अपना गांव वापिस लौट गए। ईसा ने यूसुफ का पेशा सीख लिया और लगभग 30 साल की उम्र तक उसी गाँव में रहकर वे बढ़ई का काम करते रहे। बाइबिल (इंजील) में उनके 13 से 29 वर्षों के बीच का कोई ज़िक्र नहीं मिलता। 30 वर्ष की उम्र में उन्होंने यूहन्ना

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 7, July 2023 |

(जॉन) से पानी में डुबकी (दीक्षा) ली। डुबकी के बाद ईसा पर पवित्र आत्मा आया। 40 दिन के उपवास के बाद ईसा लोगों को शिक्षा देने लगे।

बैबलियाई आत्मकथा

जन्म

हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो देखो, पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे। कि यहूदियों का राजा जिस का जन्म हुआ है, कहां है? क्योंकि हम ने पूर्व में उसका तारा देखा है और उस को प्रणाम करने आए हैं। यह सुनकर हेरोदेस राजा और उसके साथ सारा यरूशलेम घबरा गया। और उस ने लोगों के सब महायाजकों और शास्त्रियों को इकट्ठे करके उन से पूछा, कि मसीह का जन्म कहाँ होना चाहिए? उन्होंने उस से कहा, यहूदिया के बैतलहम में; क्योंकि भविष्यद्वक्ता के द्वारा यों लिखा है। कि हे बैतलहम, जो यहूदा के देश में है, तू किसी रीति से यहूदा के अधिकारियों में सब से छोटा नहीं; क्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल की रखवाली करेगा। तब हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाकर उन से पूछा, कि तारा ठीक किस समय दिखाई दिया था। और उस ने यह कहकर उन्हें बैतलहम भेजा, कि जाकर उस बालक के विषय में ठीक ठीक मालूम करो और जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो ताकि मैं भी आकर उस को प्रणाम करूं। वे राजा की बात सुनकर चले गए और देखो, जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा था, वह उन के आगे आगे चला और जंहा बालक था, उस जगह के ऊपर पंहुचकर ठहर गया॥ उस तारे को देखकर वे अति आनन्दित हुए। और उस घर में पहुंचकर उस बालक को उस की माता मरियम के साथ देखा और मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया; और अपना अपना यैला खोलकर उसे सोना और लोहबान और गन्धरस की भेंट चढ़ाई। और स्वप्न में यह चितौनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से होकर अपने देश को चले गए॥ उन के चले जाने के बाद देखो, प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर कहा, उठ; उस बालक को और उस की माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा; और जब तक मैं तुझ से न कहूं, तब तक वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूंढ़ने पर है कि उसे मरवा डाले। वह रात ही को उठकर बालक और उस की माता को लेकर मिस्र को चल दिया। और हेरोदेस के मरने तक वहीं रहा; इसलिये कि वह वचन जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था कि मैं ने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया पूरा हो। जब हेरोदेस ने यह देखा, कि ज्योतिषियों ने मेरे साथ ठट्ठा किया है, तब वह क्रोध से भर गया; और लोगों को भेजकर ज्योतिषियों से ठीक ठीक पूछे हुए समय के अनुसार बैतलहम और उसके आस पास के सब लड़कों को जो दो वर्ष के, वा उस से छोटे थे, मरवा डाला। तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हुआ, कि रामाह में एक करूण-नाद सुनाई दिया, रोना और बड़ा विलाप, राहेल अपने बालकों के लिये रो रही थी और शान्त होना न चाहती थी, क्योंकि वे हैं नहीं॥ हेरोदेस के मरने के बाद देखो, प्रभु के दूत ने मिस्र में यूसुफ को स्वप्न में दिखाई देकर कहा। कि उठ, बालक और उस की माता को लेकर इस्राएल के देश में चला जा; क्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते थे, वे मर गए। वह उठा और बालक और उस की माता को साथ लेकर इस्राएल के देश में आया। परन्तु यह सुनकर कि अरिखलाउस अपने पिता हेरोदेस की जगह यहूदिया पर राज्य कर रहा है, वहां जाने से डरा; और स्वप्न में चितौनी पाकर गलील देश में चला गया। और नासरत नाम नगर में जा बसा; ताकि वह वचन पूरा हो, जो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था, कि वह नासरी कहलाएगा॥

लड़कपन

और बालक बढ़ता और बलवन्त होता और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था। उसके माता-पिता प्रति वर्ष फसह के पर्व में यरूशलेम को जाया करते थे। जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो वे पर्व की रीति के अनुसार यरूशलेम को गए। और जब वे उन दिनों को पूरा करके लौटने लगे, तो वह लड़का यीशु यरूशलेम में रह गया; और यह उसके माता-पिता नहीं जानते थे। वे यह समझकर, कि वह और यात्रियों के साथ होगा, एक दिन का पड़ाव निकल गए: और उसे अपने कुटुम्बियों और जान-पहचानों में ढूंढ़ने लगे। पर जब नहीं मिला, तो ढूंढ़ते-ढूंढ़ते यरूशलेम को फिर लौट गए। और तीन दिन के बाद उन्होंने उसे मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठे, उन की सुनते और उन से प्रश्न करते हुए पाया। और जितने उस की सुन रहे थे, वे सब उस की समझ और उसके उत्तरों से चकित थे। तब वे उसे देखकर चकित हुए और उस की माता ने उस से कहा; हे पुत्र, तू ने हम से क्यों ऐसा व्यवहार किया? देख, तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे। उस ने उन से कहा; तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते थे? क्या नहीं जानते थे, कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है? परन्तु जो बात उस ने उन से कही, उन्होंने उसे नहीं समझा। तब वह उन के साथ गया और नासरत में आया और उन के वश में रहा; और उस की माता ने ये सब बातें अपने मन में रखीं॥ और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया॥

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 7, July 2023 |

माँ मरियम

छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत गलील के नासरत नगर में एक कुंवारी के पास भेजा गया। जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरूष से हुई थी: उस कुंवारी का नाम मरियम था। और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा; आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है। वह उस वचन से बहुत घबरा गई और सोचने लगी, कि यह किस प्रकार का अभिवादन है? स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। और देख, तू गर्भवती होगी और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा; और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा। और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा। मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरूष को जानती ही नहीं। स्वर्गदूत ने उस को उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।[1,2,3]

चमत्कार

यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक (बाईबल) में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास कर के उसके नाम से जीवन पाओ।(यूहन्ना 20:30,31)।[17] यह बहुत अच्छे इंसान थे जिसके सिर पर हाथ वह धन्य हो जाता था येशु ने अपने जीवन में अनगिनत चमत्कार किये जो पृथ्वी पर किसी और के लिए नामुमकिन थे

धर्म-प्रचार

तीस साल की उम्र में ईसा ने इस्राइल की जनता को यहूदी धर्म का एक नया रूप प्रचारित करना शुरु कर दिया। उस समय तीस साल से कम उम्र वाले को सभागृह मे शास्त्र पढ़ने के लिए और उपदेश देने के लिए नही दिया करते थे। उन्होंने कहा कि ईश्वर (जो केवल एक ही है) साक्षात प्रेमरूप है और उस वक़्त के वर्त्तमान यहूदी धर्म की पशुबलि और कर्मकाण्ड नहीं चाहता। यहूदी ईश्वर की परमप्रिय नस्ल नहीं है, ईश्वर सभी मुल्कों को प्यार करता है। इंसान को क्रोध में बदला नहीं लेना चाहिए और क्षमा करना सीखना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वे ही ईश्वर के पुत्र हैं, वे ही मसीह हैं और स्वर्ग और मुक्ति का मार्ग हैं। यहूदी धर्म में क़यामत के दिन का कोई ख़ास ज़िक्र या महत्त्व नहीं था, पर ईसा ने क़यामत के दिन पर ख़ास ज़ोर दिया - क्योंकि उसी वक़्त स्वर्ग या नर्क इंसानी आत्मा को मिलेगा। ईसा ने कई चमत्कार भी किए।

विचार-विमर्श

विरोध, मृत्यु और पुनरुत्थान

ईसा अपना ही क्रूस उठाये हुए

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 7, July 2023 |

यहूदियों के कट्टरपन्थी रब्बियों (धर्मगुरुओं) ने ईसा का भारी विरोध किया। उन्हें ईसा में मसीहा जैसा कुछ ख़ास नहीं लगा। उन्हें अपने कर्मकाण्डों से प्रेम था। ख़ुद को ईश्वरपुत्र बताना उनके लिये भारी पाप था। इसलिये उन्होंने उस वक़्त के रोमन गवर्नर पिलातुस को इसकी शिकायत कर दी। रोमनों को हमेशा यहूदी क्रान्ति का डर रहता था। इसलिये कट्टरपन्थियों को प्रसन्न करने के लिए पिलातुस ने ईसा को क्रूस (सलीब) पर मौत की दर्दनाक सज़ा सुनाई।

बाइबल के मुताबिक़, रोमी सैनिकों ने ईसा को कोड़ों से मारा। उन्हें शाही कपड़े पहनाए, उनके सर पर कांटों का ताज सजाया और उनपर थूका और ऐसे उन्हें तौहीन में "यहूदियों का बादशाह" बनाया। पीठ पर अपना ही क्रूस उठवाके, रोमियों ने उन्हें गल्गाता तक लिया, जहां पर उन्हें क्रूस पर लटकाना था। गल्गाता पहुंचने पर, उन्हें मदिरा और पित्त का मिश्रण पेश किया गया था। उस युग में यह मिश्रण मृत्युदंड की अत्यंत दर्द को कम करने के लिए दिया जाता था। ईसा ने इसे इंकार किया। बाइबल के मुताबिक़, ईसा दो चोर के बीच क्रूस पर लटकाया गया था।[7,8,9,10]

ईसाइयों का मानना है कि क्रूस पर मरते समय ईसा मसीह ने सभी इंसानों के पाप स्वयं पर ले लिए थे और इसलिए जो भी ईसा में विश्वास करेगा, उसे ही स्वर्ग मिलेगा। मृत्यु के तीन दिन बाद ईसा वापिस जी उठे और 40 दिन बाद सीधे स्वर्ग चले गए। ईसा के 12 शिष्यों ने उनके नये धर्म को सभी जगह फैलाया। यही धर्म ईसाई धर्म कहलाया।

ईसाई संप्रदाय में, सुसमाचार या गॉस्पेल, जिसे (इस्लाम में) इंजील भी कहा जाता है, यीशु मसीह का इस दुनिया में आना और उद्धार करना को समाचार को कहते हैं।[1] यह मूलतः एक वर्णात्मक कथा है, जिसमें यीशु मसीह, उनके जन्म, उनके जीवन, सूली पर चढ़ाये जाने और पुनरुत्थान (अर्थात् यीशु मसीह का मृतकों में से जी उठना) को बताया गया है।

★ कई लोगों का कहना है, कि, यह एक विदेशी धर्म है, लेकिन बाइबल ऐसा बताती है कि, यीशु मसीह किसी का धर्म बदलने के लिए नहीं आया, और यह भी कि, परमेश्वर किसी विशेष जाति के लिए नहीं आया, किसी विशेष धर्म के लिए नहीं आया, वो इसलिएआया ताकि लोग सच्चाई को जानें। ★

बाइबल के विभिन्न अनुवादों में इसे शुभसंदेश या खुशखबरी[2] भी कहा गया है, जोकि यूनानी शब्द यूआनजेलिऑन के पुराणी अंग्रेजी अनुवाद, गॉस्पेल का हिंदी में अनुवादित रूप है। सुसमाचार की कथा का सार, बाइबल की चार किताबों में पाया जाता है: मत्ती, मरकुस, लुका, और युहन्ना।[11,12]

परिणाम

नामकरण

बाइबल के हिंदी अनुवादों में गॉस्पेल को शुभसंदेश या सुसमाचार कहा गया है। यह शब्द यूनानी शब्द यूआनजेलिऑन (εὐαγγέλιον) से आता है, जिसका अर्थ है, "अच्छी खबर", यह दो यूनानी शब्दों से आया है: εὖ (यू) "शुभ" + ἄγγελος (आंजेलोस) "संदेशवाहक"। इसी शब्द को लैटिन भाषा के अपभ्रंशों में evangelium (एवाङ्गेलियम) के रूप में अपना लिया गया, जिसे यूरोप के अन्य भाषाओँ में सम्मिलित कर लिया गया। पुरानी अंग्रेजी में अनुवाद में, यूनानी शब्दावली यूआनजेलिऑन को गूड्सपील (gōdspel) के रूप में अनुवादित किया गया, जो पुरानी अंग्रेजी के दो शब्दों से आता है:gōd "शुभ" + spel "समाचार", इसे मध्यकालीन अंग्रेजी में, वर्तनी सुधर किये बिना "गॉस्पेल" (Gospel) के रूप में अपना लिया गया। सुसमाचार, इन्हीं शब्दों का अनुवादित रूप है।

सुसमाचार का यह सन्देश, ईसाई धर्म की धार्मिक-संकल्पना में मौलिक स्थान रखता है। तथा ईसाई धर्म के दार्शनिक परिपेक्ष को समझने के लिए इसे समझना महत्वपूर्ण है। एक धर्मसिद्धांत के रूप में, सुसमाचार को नए नियम के कई पत्रों में वर्णित किया गया है। ईसाई मान्यता के अनुसार, यह समाचार, मानवता के प्रति ईश्वर की दया का सूचक है, जिसके ज़रिये ईश्वर ने अपने पुत्र यीशु को धरती पर भेज कर, सूली पर चढ़ाकर, समस्त मानवता के पापों का प्रायश्चित करवा, मानवता और ईश्वर के बीच सुलह स्थापित कर दिया। इसके अलावा, इस सुसमाचार की कथा में, विश्वासियों पर पवित्र आत्मा का उतारना और यीशु के पुनर आगमन का सन्देश भी शामिल है। कुल मिला कर सुसमाचार की कथा और इससे जुडी संकल्पनाएँ, ईसाई धर्मशास्त्र की मूल मान्यताओं में से एक है।[15,17]

ईसाई शास्त्र, यीशु मसीह में निर्वाण के इस सुसमाचार को, नए नियम में रची गयी एक नई संकल्पना नहीं मानता। ईसाई मान्यता के अनुसार, इसके होने की भविष्यवाणी पुराने नियम में भी की गयी है, तथा उत्पत्ति की किताब में, मानव के पतन की घटना के समय भी सुसमाचार का प्रचार नबियों द्वारा भविष्यवाणी के रूप में किया गया पाया जाता है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 7, July 2023 |

ईसाई धर्म, ईसाइयत या मसीही धर्म (अंग्रेज़ी- Christianity, क्रिश्चियानिटी, यूनानी : Χρῑστῐᾱνισμός, क्रिस्तियानिस्मोस् से व्युत्पन्न; हिब्रू: נצרות; अरामी: ܡܫܝܚܝܘܬܐ) नासरत के यीशु के जीवन और शिक्षाओं पर आधारित एक इब्राहीमी एकेश्वरवादी धर्म है । यह दुनिया का सबसे बड़ा, सर्वाधिक जनसंख्या वाला सबसे व्यापक धर्म है, जिसके लगभग 2.4 अरब अनुयायी वैश्विक जनसंख्या का एक तिहाई प्रतिनिधित्व करते हैं ।[1][2] अनुमान के अनुसार, इसके अनुयायी, जिन्हें ईसाई या मसीही कहा जाता है, 157 देशों और क्षेत्रों में आबादी के बहुसंख्यक हैं[3], और यह मानते हैं कि यीशु ईश्वर के पुत्र हैं , जिनकी मसीहा के रूप में भविष्यवाणी हिब्रू बाइबिल (ईसाई धर्म में जिसे पुराना नियम कहा जाता है) में की गई थी और बाइबिल के नए नियम में इसका वर्णन किया गया।[4] यह विश्व के प्राचीन धर्मों में से एक है जो प्राचीन यहूदी परंपरा से निकला है। ईसाई परंपरा के अनुसार इसकी शुरुआत प्रथम सदी ई. में फिलिस्तीन में हुई है और आज इसके मुख्ययतः तीन संप्रदाय हैं, कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट और पूर्वी रूढ़िवादी चर्च[5] ईसाइयों के धर्मस्थल को गिरिजाघर कहते हैं।

ईसाई धर्म अपनी पश्चिमी और पूर्वी शाखाओं में सांस्कृतिक रूप से विविध है , और उद्धार की औचित्य और प्रकृति, कलिसीयाशास्त्र, पुरोहिताभिषेक और मसीहशास्त्र के संबंध में सैद्धांतिक रूप से विविध है । विभिन्न ईसाई संप्रदायों के धर्मसार आम तौर पर यीशु को ईश्वर के पुत्र के रूप में मानते हैं - लोगोस् का अवतरित रूप - जिन्होंने सेवकाई की , पीड़ा उठाया और क्रूस पर मृत्यु को प्राप्त हो गए , लेकिन मानव जाति के उद्धार के लिए मृतक से पुनः जी उठे ; जिसे कहा जाता है सुसमाचार या गॉस्पेल , जिसका अर्थ है "अच्छी खबर"। यीशु के जीवन और शिक्षाओं का वर्णन मत्ती , मरकुस , लुका और यहुन्ना के चार विहित सुसमाचारों में किया गया है , जिसमें पुराने नियम को सुसमाचार की सम्मानित पृष्ठभूमि के रूप में दर्शाया गया है।

ईसाई धर्म यीशु के जन्म के बाद पहली शताब्दी में यहूदिया के रोमन प्रांत में हेलेनीयाई प्रभाव वाले एक यहूदी संप्रदाय के रूप में शुरू हुआ। बड़ी मात्रा में उत्पीड़न के बावजूद, यीशु के शिष्यों ने पूर्वी भूमध्यसागरीय क्षेत्र में अपनी अस्था फैलायी ।अन्यजातियों और गैर-यहुदीयों को शामिल करने से ईसाई धर्म धीरे-धीरे यहूदी परम्परा (दूसरी शताब्दी) से अलग हो गया। सम्राट कॉन्सटेंटाइन महान ने मिलान के राजादेश द्वारा रोमन साम्राज्य में ईसाई धर्म को अपराधमुक्त कर दिया (313), बाद में निकिया परिषद (325) बुलाई गई जहां प्रारंभिक ईसाई धर्म को रोमन साम्राज्य के राज्य चर्च (380) में समेकित किया गया। पूर्व की कलीसिया और प्राच्य रूढ़ीवाद दोनों मसीहशास्त्र (5वीं शताब्दी) में मतभेदों के कारण अलग हो गए[6], जबकि पूर्वी रूढ़ीवादि कलीसिया और कैथोलिक कलीसिया पूर्व-पश्चिम विच्छेद(1054) में अलग हो गए । धर्मसुधार युग (16वीं शताब्दी) में प्रोटेस्टेंटवाद कैथोलिक चर्च से कई संप्रदायों में विभाजित हो गया । खोज के युग का अनुसरण (15वीं-17वीं शताब्दी), धर्मप्रचार कार्य , व्यापक व्यापार[7] और उपनिवेशवाद के माध्यम से ईसाई धर्म का दुनिया भर में विस्तार हुआ । ईसाई धर्म ने पाश्चात्य सभ्यता के विकास में , विशेष रूप से यूरोप में प्राचीन काल और मध्य युग से एक प्रमुख भूमिका निभाई।[8][9][10][11]

ईसाई धर्म की छह प्रमुख शाखाएँ हैं: रोमन कैथोलिक पंथ (1.3 अरब लोग), प्रोटेस्टेंटवाद (80 करोड़), पूर्वी रूढ़िवादी (22 करोड़), प्राच्य रूढ़िवादी (6 करोड़)[12][13], पुनर्स्थापनवाद (3.5 करोड़)[14] , और पूर्व की कलीसिया (600 हजार)। एकता (सार्वभौमिक अंतरकलिसीयाई एकतावाद) के प्रयासों के बावजूद छोटे चर्च समुदायों की संख्या हजारों में है[15]।पश्चिम में , ईसाई धर्म पालन में गिरावट के बावजूद भी यह वहाँ का प्रमुख धर्म बना हुआ है, जिसकी लगभग 70% आबादी ईसाई के रूप में स्वयं की पहचान रखती है।[16][17] दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले महाद्वीप अफ्रीका और एशिया में ईसाई धर्म बढ़ रहा है।[16] ईसाइयों को दुनिया के कई क्षेत्रों में, विशेष रूप से मध्य पूर्व , उत्तरी अफ्रीका , पूर्वी एशिया और दक्षिण एशिया व भारत में बहुत उत्पीड़ित जाता है।[10,11,12]

इस पन्थ की मान्यता यह है कि परमेश्वर आत्मा है और आत्मा का हड्डी और मांस नहीं होता है अर्थात् जिसे हम देख नही सकते उसकी प्रतिमा कैसे बना सकते हैं। उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर को कभी किसी ने भी शारीरिक आंखों से नही देखा। पर परमेश्वर ने मानवजाति पर अपनी प्रेम इस रीति प्रकट किया कि उसने मनुष्य रूप धारण किया। वह पराकर्मी परमेश्वर जिसने काल, समय और मनुष्य को बनाया। वह खुद अपने काल, समय, में सिमटकर आया। ताकि मानवजाति उसके द्वारा अपने अपने पापों से छुटकारा पा सके।

चौथी सदी तक यह पन्थ किसी क्रांति की तरह फैला, किंतु इसके बाद ईसाई पन्थ में अत्यधिक ||कर्मकांडों|| की प्रधानता तथा पन्थ सत्ता ने दुनिया को अंधकार युग में धकेल दिया था। फलस्वरूप पुनर्जागरण के बाद से इसमें रीति-रिवाजों के बजाय आत्मिक परिवर्तन पर अधिक जोर दिया जाता है।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 7, July 2023 |

निष्कर्ष

ईश्वर

ईसाई तीन तत्त्व वादी हैं, और वे ईश्वर को तीन रूपों में समझते हैं - परमपिता परमेश्वर, उनके पुत्र ईसा मसीह (यीशु मसीह) और पवित्र आत्मा।

परमपिता

परमपिता इस सृष्टि के रचयिता हैं और इसके शासक भी।

ईसा मसीह

ईसा मसीह स्वयं परमेश्वर के पुत्र है| जो पतन हुए (पापी) सभी मनुष्यों को पाप और मृत्यु से बचाने के लिए जगत में देहधारण होकर (देह में होकर) आए थे। परमेश्वर जो पवित्र हैं। एक देह में प्रकट हुए ताकि पापी मनुष्यों को नहीं परंतु मनुष्यों के अंदर के पापों को खत्म करें। वे इस पृथ्वी पर जो पापी, बीमार, मूर्खों और सताए हुए थे उनका पक्ष लिया और उनके बदले में पाप की कीमत अपनी जान देकर चुकाई ताकि मनुष्य बच सकें। यह पापी मनुष्य और पवित्र परमेश्वर के मिलन का मिशन था जो प्रभु ईसा मसीह के कुरबानी से पूरा हुआ। एक सृष्टिकर्ता परमेश्वर हो कर उन्होंने पापियों को नहीं मारा बल्कि पाप का इलाज किया।[12,13]

यह बात परमेश्वर पिता का मनुष्यों के प्रति अटूट प्रेम को प्रकट करता है। मनुष्यों को पाप से बचाने के लिये परमेश्वर शरीर में आए। यह बात ही ईसा मसीह का परिचय है। ईसा मसीह परमेश्वर के पुत्र थे। यही बात आज का ईसाई धर्म का आधार है। उन्होंने स्वयं कहा मैं हूँ। ईसा मसीह (यीशु) एक यहूदी थे जो इजराइल के गाँव बेतलहम में जन्मे है (4 ईसा पूर्व)। ईसाई मानते हैं कि उनकी माता मरियम "नर्तकी" थीं। ईसा मसीह उनके गर्भ में परमपिता परमेश्वर की कृपा से चमत्कारिक रूप से आये है। ईसा मसीह के बारे में यहूदी रब्बीयों ने भविष्यवाणी की थी कि एक मसीहा (नबी) जन्म लेगा। ईसा मसीह ने इजराइल में यहूदियों के बीच प्रेम का संदेश सुनाया और कहा कि वो ही ईश्वर के पुत्र हैं। इन बातों पर पुराणपंथी यहूदी धर्मगुरु भड़क उठे और उनके कहने पर इजराइल के रोमन राज्यपाल ने ईसा मसीह को क्रॉस पर चढ़ाकर मारने का प्राणदंड दे दिया। ईसाई मानते हैं कि इसके तीन दिन बाद ईसा मसीह का पुनरुत्थान हुआ या ईसा मसीह पुनर्जीवित हो गये। ईसा के उपदेश बाइबिल के नये नियम में उनके 12 शिष्यों द्वारा रेखांकित किये गये हैं।

ईसा मसीह का पुनरुत्थान यानी मृत्यु पर विजय पाने के बाद अथवा तीसरे दिन में जीवित होने के बाद ईसा मसीह एक साथ प्रार्थना कर रहे सभी शिष्य और अन्य मिलाकर कुल 40 लोग वहाँ मौजूद थे पहले उन सभी के सामने प्रकट हुए । उसके बाद बहुत सी जगहों पर और बहुत लोगो के साथ भी।[15,17]

पवित्र आत्मा

पवित्र आत्मा त्रित्व परमेश्वर के तीसरे व्यक्तित्व हैं जिनके प्रभाव में व्यक्ति अपने अंदर ईश्वर का अहसास करता है। ये ईसा मसीह के गिरजाघर एवं अनुयाईयों को निर्देशित करते हैं।

बाइबिल

ईसाई धर्मग्रंथ बाइबिल में दो भाग हैं। पहला भाग पुराना नियम कहलाता है, जो कि यहूदियों के धर्मग्रंथ तनख़ का ही संस्करण है। दूसरा भाग नया नियम कहलाता तथा ईसा मसीह के उपदेश, चमत्कार और उनके शिष्यों के कामों का वर्णन करता है।

संप्रदाय

ईसाइयों के मुख्य संप्रदाय हैं :

कैथोलिक

कैथोलिक संप्रदाय में पोप को सर्वोच्च धर्मगुरु मानते हैं।

ऑर्थोडॉक्स

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 10, Issue 7, July 2023 |

ऑर्थोडॉक्स रोम के पोप को नहीं मानते, पर अपने-अपने राष्ट्रीय धर्मसंघ के कुलपति (पैट्रिआर्च) को मानते हैं और परंपरावादी होते हैं।

प्रोटेस्टेंट

प्रोटेस्टेंट किसी पोप को नहीं मानते है और इसके बजाय पवित्र बाइबल में पूरी श्रद्धा रखते हैं। मध्य युग में जनता के बाइबिल पढ़ने के लिए नकल करना मना था। जिससे लोगो को ईसाई धर्म का उचित ज्ञान नहीं था। कुछ बिशप और पादरियों ने इसे सच्चे ईसाई धर्म के अनुसार नहीं समझा और बाइबिल का अपनी अपनी भाषाओ में भाषांतर करने लगे, जिसे पोप का विरोध था। उन बिशप और पादारियों ने पोप से अलग होके एक नया संप्रदाय स्थापित किया जिसे प्रोटेस्टेंट कहते हैं।[17]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. Meier, John P. (1991). A Marginal Jew: The roots of the problem and the person. Yale University Press. पृ॰ 407. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-300-14018-7.
2. ↑ Rahner 2004, पृ॰ 732.
3. ↑ Sanders 1993, पृ॰प॰ 10–11.
4. ↑ Finegan, Jack (1998). Handbook of Biblical Chronology, rev. ed. Hendrickson Publishers. पृ॰ 319. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-1-56563-143-4.
5. ↑ Brown, Raymond E. (1977). The birth of the Messiah: a commentary on the infancy narratives in Matthew and Luke. Doubleday. पृ॰ 513. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-385-05907-7.
6. ↑ Humphreys, Colin J.; Waddington, W. G. (1992). "The Jewish Calendar, a Lunar Eclipse and the Date of Christ's Crucifixion" (PDF). Tyndale Bulletin. 43 (2): 340. मूल से 30 सितंबर 2018 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 4 दिसंबर 2018.
7. ↑ Dunn 2003, पृ॰ 339.
8. ↑ Ehrman 1999, पृ॰ 101.
9. ↑ Theissen & Merz 1998.
10. ↑ युनानी: Ἰησοῦς, रोमानीकृत: Iēsoûs, संभवतः इब्रानी/अरामी:יְהוֹשֻׁעַ से , रोमानीकृत: Yēšūaʿ (Yeshua)
11. ↑ 2011 में आधुनिक विद्वता की स्थिति की समीक्षा में, बार्ट एहरमैन ने लिखा, "वह निश्चित रूप से अस्तित्व में था, जैसा कि पुरातनता के लगभग हर सक्षम विद्वान, ईसाई या गैर-ईसाई, सहमत हैं"। [11] रिचर्ड ए. बुरिज कहते हैं: "ऐसे लोग हैं जो यह तर्क देते हैं कि यीशु चर्च की कल्पना की एक कल्पना है, कि कभी कोई यीशु नहीं था। मेरा कहना है कि मैं किसी भी सम्मानित आलोचनात्मक विद्वान को नहीं जानता जो यह कहता है कि अब और नहीं" .[12] रॉबर्ट एम. प्राइस यह नहीं मानते कि यीशु का अस्तित्व था, लेकिन इससे सहमत हैं कि यह दृष्टिकोण अधिकांश विद्वानों के विचारों के विरुद्ध है। [13] जेम्स डी. जी. डन ने यीशु के गैर-अस्तित्व के सिद्धांतों को "एक पूरी तरह से मृत थीसिस" कहा है। माइकल ग्रांट (एक क्लासिकिस्ट) ने 1977 में लिखा, "हाल के वर्षों में, 'किसी भी गंभीर विद्वान ने यीशु की गैर-ऐतिहासिकता को मानने का साहस नहीं किया है' या किसी भी दर पर बहुत कम हैं, और वे बहुत मजबूत, वास्तव में बहुत अधिक का निपटान करने में सफल नहीं हुए हैं। प्रचुर मात्रा में, इसके विपरीत प्रमाण"।[15] रॉबर्ट ई. वैन वूर्स्ट कहते हैं कि बाइबिल के विद्वान और शास्त्रीय इतिहासकार यीशु के गैर-अस्तित्व के सिद्धांतों को प्रभावी रूप से खंडित मानते हैं। [16] न्यूज़बीस्ट पर लिखते हुए, कैंडिडा मॉस और जोएल बैडेन कहते हैं कि "बाइबिल के विद्वानों के बीच लगभग सार्वभौमिक सहमति है - प्रामाणिक लोग, कम से कम - कि यीशु वास्तव में एक वास्तविक व्यक्ति थे।
12. ↑ The Story of Prophet Jesus (Isa) (अंग्रेज़ी में).
13. ↑ Shah, Yasrab (2020-12-25). "7 Things Muslims Should Know about Prophet 'Isa (as)". muslimhands.org.uk (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2022-11-15.
14. ↑ "Center for Muslim-Jewish Engagement". web.archive.org. 2015-05-01. मूल से 1 मई 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2022-11-15.
15. ↑ Glassé, Cyril (2008). The New Encyclopedia of Islam (अंग्रेज़ी में). Rowman & Littlefield. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-7425-6296-7.
16. ↑ "Surah Al-Kahf - 1-110". Quran.com (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2022-11-15.
17. ↑ "बाइबिल". www.wordproject.org. मूल से 3 अप्रैल 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2 अप्रैल 2018.

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com